International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 10 Issue 4, April - 2020
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

रामचरितमानस के सन्दर्भ में : आतंकवाद

डा. पी.के. शर्मा,
अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग,
सेठ फूलचन्द बागला (पी.जी.) कालेज, हाथरस

'आतंकवाद'एक व्याधिकीय समस्या के रूप में अल्पाधिक मात्रा में सदैव विद्यमान रहा है। आतंकवादी उपद्रव व उत्पीड़न मानव को भयाक्रान्त कर समाज को आघातित करता रहा है, विघटन का स्वरूप ग्रहण कर। इस प्रकार यह एक विघटनकारी समस्या है। हिंसात्मक क्रान्ति, अभित्रास (भयभीत करना) विद्रोह आदि शब्दों का प्रयोग भी प्रायः आतंकवाद के लिए विचारक करते रहे हैं परन्तु वे आंतकवाद के आशय एवं गतिविधियों के समीप होते हुए भी समानार्थी नहीं कहे जा सकते। यथार्थतः भय उत्पन्न कर भयाक्रान्त करने की एक संगठित प्रणाली है जो हिंसा एवं क्रूरता मानदण्डों के आधार पर अपने निर्धारित उद्देश्य की ओर गतिशील होती है। इस प्रकार आतंकवाद एक सुविचारित एवं सुनियोजित नीति का परिणाम कहा जा सकता है।

समाजशास्त्रीय विश्वकोष में आतंकवाद की परिभाषा एक ऐसी संगठित पद्धति के रूप में की गयी है जिसका अनुसरण एक संगठित समूह या दल अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु करता है– ''आतंकवाद वह शब्द है जो उस पद्धति या पद्धति के पीछे निहित सिद्धान्त का वर्णन करने के लिए प्रयोग किया जाता है जिसमें एक संगठित समूह या दल व्यवस्थित हिंसा के द्वारा अपने प्रकट उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रयास करता है।''[1]

समाजशास्त्री राम आहूजा की दृष्टि में आतंकवाद की अवधारणा – व्याख्या की दृष्टि से अस्पष्ट ही रही है।[2] वे आतंकवाद को अभित्रास की एक संगठित पद्धति मानते हैं।[3] सामान्यतः आतंकवाद की परिभाषा इस प्रकार दी जाती रही है– एक हिंसक व्यवहार है जो समाज या उसके बड़े भाग में राजनीतिक उद्देश्यों से भय पैदा करने के इरादे से किया जाता है।[4] आपके अनुसार– ''आतंकवाद हिंसा का या हिंसा की धमकी का उपयोग है तथा लक्ष्य प्राप्ति के लिए संघर्ष/लड़ाई की एक विधि या रणनीति है एवं अपने शिकार में भय पैदा करना इसका प्रमुख उद्देश्य है। यह क्रूर है और मानवीय प्रतिमानों का पालन नहीं करता।[5]

उपरोक्त परिभाषाओं के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि आतंकवाद 1– लक्ष्य प्राप्ति हेतु संघर्ष की एक पद्धति है। 2– हिंसा पर आधारित है। 3– अभित्रास अर्थात भय उत्पन्न करने की एक विधि है। 4– क्रूरता एवं पाशविक वृत्ति पर अविलम्बित है। 5– प्रचार एवं प्रकाशन आवश्यक तत्व हैं। 6– राजनीतिक हितों की पूर्ति।

अतः कहा जा सकता है कि आतंकवाद अभित्रास की एक संगठित पद्धति है जिसके माध्यम से एक समूह या दल अपने प्रकट उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हिंसा एवं क्रूरता का योजनाबद्ध रूप से उपयोग करता है जिसका परिणाम धन–जन की हानि के रूप में प्रकट होता है।

आतंकवादी गतिविधि में लिप्त व्यक्ति ही आतंकवादी कहलाता है। समाज विज्ञान विश्वकोश के अनुसार – ''आतंकवादी वह है जो अपने संगठन द्वारा निर्धारित किये गये दण्ड को उन व्यक्तियों पर लागू करता है जो क्रान्तिकारी कार्यक्रमों में रूकावट पहुॅचाने के दोषी माने जाते हैं।

आतंकवादी धमकी नहीं देता, अपितु मृत्यु अथवा विध्वंस उसके कार्यक्रम का भाग है। यदि उसे बन्दी बना लिया जाता है तो वह स्वयं को निर्दोष प्रमाणित करने का प्रयास नहीं करता बल्कि वह अपने सिद्धान्तों को प्रचारित करता है। [6]

आतंकवाद की ऐतिहासिक, राजनीतिक, वैधानिक आदि विभिन्न संदर्भों में व्याख्या की जाती रही है। समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण हेतु जौर्डन पाइस्ट निम्न बिन्दुओं को निर्धारित करते हैं [7]

1– आतंकवाद में आतंकवादियों, उनके निशाने, शिकार आदि के रूप में लिप्त सहयोगियों के प्रकार।

2– भाग लेने वालों के प्रकार।

3– वास्तविक अन्तः क्रिया की स्थितियॉ।

4– प्रत्येक किस्म के भागीदार के पास संसाधनों के प्रकार।

5– आतंक के लिए उपयोग में लायी गयी रणनीतियॉ, हत्याऐं, अपहरण, बम विस्फोट लूट और हाइजैकिंग

6– आतंकवादी प्रक्रिया का परिणाम मृत्यु, चोटें, सम्पत्ति का विनाश।

रामचरितमानस में राक्षस समूह आर्य प्रजातियों के विरूद्ध अपने उद्देश्य सिद्धि हेतु हिंसा का उपयोग करते हैं। धर्म को निर्मूल कर – जप, तप, व्रत करने वाले ऋषि–मुनियों के आश्रमों में उपद्रव कर आतंक से भय उत्पन्न करते हैं। राक्षस राज रावण धमकी ही नहीं अपितु विध्वंसात्मक कृत्यों के द्वारा भय आतंक उत्पन्न करता है, प्रेरित करता है – उसका विरोध देवताओं से है–

'सुनहु सकल रजनीचर जूथा। हमरे बैरी दिबुध बरूथा।।[8]

इस हेतु वह अपने प्रमुख साथियों को प्रेरित करता है–

''द्विज भोजन मख होम सराधा। सबकै जाइ करहुँ तुम्ह बाधा।।'' [9]

यज्ञ, हवन, श्राद आदि जो कार्य देवता, ऋषि–मुनि करते हैं, उन सबमें बाधा उपस्थिति करो और वह स्वयं भी प्रयास करता है, उसके आतंक से पृथ्वी कांपने लगती है–

''चलत दसानन डोलति अवनी। गर्जत गर्म स्रवहिं सुर रवनी''।। [10]

देवताओं की स्त्रियों के गर्भ गिरते हैं, भय के कारण देवता पर्वतों की गुफाओं में छिपने भागते हैं–

''रावन आवत सुनेउ सकोहा। देवन्ह तके मेस्त्र गिरि खोहा''।। [11]

इस कार्य में सहयोग करने वाले उसके प्रमुख आतंकी– तारक, कालकेतु, ताड़का, सुबाहु, भारीदम्बा, विराधा, खर–दूषण, कबंध, मेघनाद, कुम्भकरण आदि हैं जिनके दृष्कृत्यों का उल्लेख रामचरितमानस में है–

''करहि उपद्रव असुर निकाया। नाना रूप धरहिं करि माया।।

जेहि विधि होई निर्मूला। सो सब करहिं बेद प्रतिकूला।।

जेहि–जेहि देसु धेनु द्विज पावहिं। नगर गॉव पुर आग लगावहिं''।। [12]

देवता ही नहीं, ऋषि–मुनि, ब्राहमण, आदि उसके आतंक से दुखी होते हैं–

देखत जग्य निसाचर धावहिं। करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं।। [13]

उनका अनीति पूर्ण आतंकी व्यवहार कवि के शब्दों से स्पष्ट ध्वनित होता है–

''बिरनि न जाइ अनीति घोर निसाचर जो करहिं।

हिंसा पर अति प्रीति तिन्हके पापहिं कवनि मिति।।'' [14]

अनीति पूर्ण व्यवहार, हिंसा में प्रीति, पापकर्म, विध्वंसात्मक व्यवहार ही राक्षसी आतंक का स्वरूप है। विचारक भी इस तथ्य की पुष्टि करते हैं–

''इस असुर जाति का हमारे देश में बड़ा आतंक था। [15] रामचरितमानस से यह स्पष्ट होता है कि लंका संचालन का प्रमुख केन्द्र था तथा भारत वर्ष में विभिन्न स्थानों उत्तरी भारत, दण्डकारण्य, कोल्हापुर आदि में आतंकी फैले हुए थे। आतंकवादियों की निष्ठुर प्रकृति का चित्रण रामचरितमानस में है–

''कामरूप खल जिनस अनेका। कुटिल भयंकर बिगत बिवेका।।

कृपारहित हिंसक सब पापी। बरनिन जाइ विस्व परितापी।।'' [16]

आतंक के विस्तार की पृष्ठभूमि में– शासकों की उदासीनता, अक्षम नेतृत्व भौतिकवाद की ओर झुकाव, अकर्म का बढ़ना, सांस्कृतिक संघर्ष आदि लक्षित होते हैं।

आतंकवाद विघटनकारी है, व्याधिकीय समस्या है जिससे सामान्य जन दुःखी व उत्पीड़ित होते हैं। असहाय महसूस करते हैं–

''सकल धर्म देखइ विपरीता। कहिन सकइ रूदन भयभीता।।'' [17]

मूल्यों का विघटन, मर्यादा का हनन एवं भ्रष्ट आचरण आतंकवाद के दुष्परिणाम हैं–

''अस भ्रष्ट अचारा या संसारा धर्म सुनिज नहिं काना।'' [18]

जनता का हतोत्साहन आतंकवाद ही परिणाम है तथ्य भी इसकी पुष्टि करते हैं– ''आतंकवाद जनसंख्या को हतोत्साहित एवं विघटित करता है और समाजों को छिन्न–भिन्न कर देता है।'' [19]

समाज की संरचना में असन्तुलन, जनता पलायन, बस्तियों का उजड़ना आदि आतंकवाद के दुष्परिणाम ही है–

''दिगपालन्ह के लोक सुहाए। सूने सकल दसानन पाए। [20]

आतंकवाद उत्पीड़ित समाज में व्याकुलता एवं धर्म मर्यादा का स्वाभाविक ही है–

''अतिसम देखि धर्म के ग्लानी। परम सभीत धरा अकुलानी''।। [21]

सामाजिक व्याधियों का विस्तार आतंकवाद का परिणाम ही है।

निष्कर्ष–

1– साहित्यकार सामाजिक व्याधियों –बुराईयों एवं समस्याओं को प्रकाश में लाकर सामाजिक नीति एवं नियोजन को आधार व दिशा प्रदान करता है।

संदर्भ–

1– "Terrorism is a term used to describe the method or the theory behind the method whereby an organised group or a party seeks to achievve its avowed aims che--- through the systematic use of violence". Encyclopaedia of the social science, Vol-13-14, 573-79

2– राम आहूजा : सामाजिक समस्याऐं, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 1994 पृ0 364

3– वही पृष्ठ– 364

4– वही पृष्ठ– 364

5– वही पृष्ठ– 364

6– Encyclopaedia of the social sciences vol. 13-14, P-575- 579.

7– Quoted by Y. Alexandor and S.M. finger, Terrorism : Interdisciplinary perspectives, John Jay Press, New York 1937, P-19

8– बा0का0 182 (क)/6

9– बा0का0 182 (क)/5

10– बा0का0 182 (क)/6

11– बा0का0 183/ 3–5

12– बा0का0 206/4

13– बा0का0सो0 183

14– राजर्षि पाराशर : रामायण एवं महाभारत का राष्ट्रवादी स्वरूप, विश्वज्ञान मन्दिर कनखल 1956. पृ0सं0– 25

15– अ0का0 33/6

16– बा0का0 184/6

17– बा0का0 183/छन्द

18– राम आहूजा : सामाजिक समस्याऐं, पृ0 385

19– बा0का0 182/17

20– बा0का0 184/5